समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

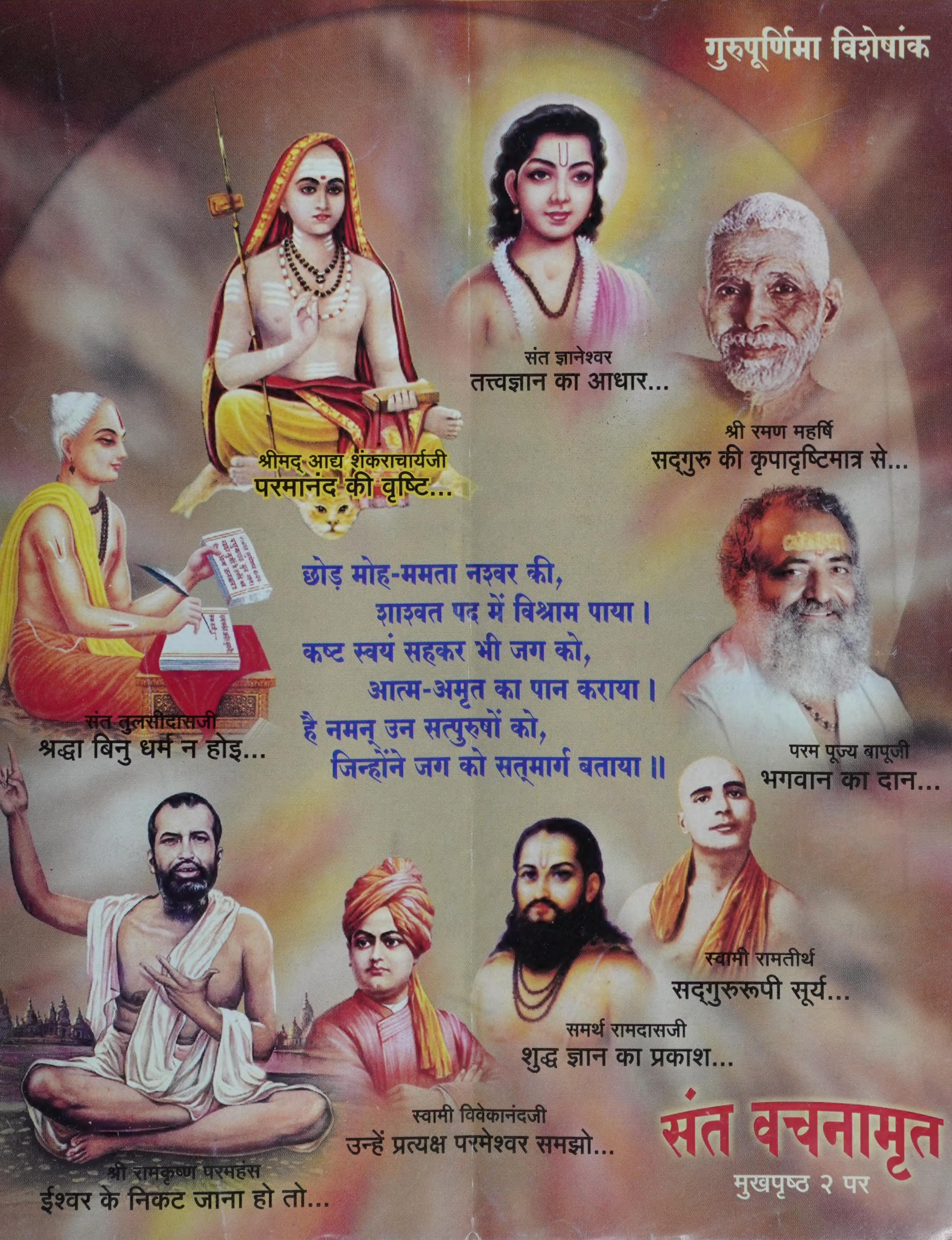
संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : रु. ३/-

लोक कल्याण सेतु

र्ष : ११ | अंक : १३२ | १६ जून से १५ जुलाई २००८

मासिक समाचार पत्र



संत वचनामृत

✲ संसारी माता-पिता तो भूख जगे तो देते हैं और वह भूख फिर से लगती रहती है। गुरुदेव तो भगवत्प्राप्ति की भूख जगा देते हैं; दुनिया का और कोई दाता नहीं है जो भगवान का दान दे डाले। सद्‌गुरुदेव तो भगवान को ही दान में दे देते हैं।

– परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू

✲ जिस प्रकार स्वप्न में सिंह के दर्शनमात्र से हाथी जाग उठता है, उसी प्रकार सद्‌गुरु की कृपादृष्टिमात्र से शिष्य भी अज्ञानरूपी निद्रा से जागकर सत्यज्ञानरूपी जाग्रति प्राप्त करता है, यह बात निश्चित है। **– श्री रमण महर्षि**

✲ श्रीगुरुदेव की कृपादृष्टि सोलहों कलायुक्त पूर्णिमा की चंद्र-किरणों के सदृश परिपूर्ण है। वह मनोवांछित फल देनेवाले कल्पवृक्ष के समान है। उस कृपादृष्टि से मनःसंताप नष्ट होकर परमानंद की वृष्टि होती है। **– श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी**

✲ जिसे गुरुसेवा के सिवा और कुछ भी अच्छा नहीं लगता वही पुरुष तत्त्वज्ञान का आधार है और उसीके कारण ज्ञान का अस्तित्व होता है। **– संत ज्ञानेश्वर**

✲ बड़े भाग्य से जब सद्‌गुरु मिलें, तब अत्यंत नम्रता, विमल सद्भाव और दृढ़ विश्वास के साथ उनकी शरण लो, अपना सम्पूर्ण हृदय उन्हें अर्पण करो, उनके प्रति अपने चित्त में परम प्रेम धारण करो, उन्हें प्रत्यक्ष परमेश्वर समझो। **– स्वामी विवेकानंद**

✲ किसी नये देश में जाना हो तो किसी एक व्यक्ति के निर्देशानुसार ही चलना चाहिए जो वहाँ का रास्ता जानता है। बहुत सारे लोगों से पूछते रहने पर गड़बड़ हो जाती है। इसी प्रकार ईश्वर के निकट जाना हो तो एक ही अनुभवी सद्‌गुरु के निर्देशानुसार चलना चाहिए।

– श्री रामकृष्ण परमहंस

✲ **श्रीगुर पद नख मनि गन जोती।**
सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती॥

– गोस्वामी तुलसीदासजी

✲ किसान चाहे कितनी भी खेती करे, खाद डाले, बीज बोए, पानी देवे परंतु जब तक सूर्य का प्रकाश नहीं मिलता तब तक सब व्यर्थ है, ऐसे ही मनुष्य चाहे कितना भी जप-तप करे, यम-नियमों का पालन करे परंतु जब तक सद्‌गुरुरूपी सूर्य का आत्मप्रकाश नहीं मिलता तब तक सब व्यर्थ है। **– स्वामी रामतीर्थ**

✲ बिना सद्‌गुरु के कल्पांत तक भी मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। सद्‌गुरु साधारण गुरुओं के समान नहीं हुआ करते। सद्‌गुरु की कृपा से शुद्ध ज्ञान का प्रकाश होता है।

– समर्थ रामदासजी

✲ सद्‌गुरु की प्राप्ति मानव-प्रयत्नों की चरम सीमा है। सद्‌गुरु और परमेश्वर अभिन्न हैं, सबमें समाये हुए हैं। सद्‌गुरु की शरण लेनेवाले का जन्म-मरण, आवागमन सदा के लिए छूट जाता है। **– गुरु नानकदेवजी**

✲ जहाँ मेरे प्यारे सद्‌गुरु का डेरा है, वहीं मेरा डेरा हो सकता है। मेरे लिए तो वही मक्का, वही मदिना। जो मेरी बात पर विश्वास न आता हो तो देख लो चारों ग्रंथ। (भैरेत, जबूर, इजील व कुरान)। **– बुल्लेशाहजी**

लोक कल्याण सेतु

वर्ष : ११
अंक : १३२
मूल्य : रु. ३/-

१६ जून से १५ जुलाई ०८

सदस्यता शुल्क :
भारत में : (१) पंचवार्षिक : रु. १००/- (२) आजीवन : रु. ३००/-
विदेशों मे : (१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

कार्यालय **'लोक कल्याण सेतु'**
संत श्री आसारामजी आश्रम,
संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-५.
फोन : (०७९) ३९८७७७३९, ६६११५७३९, २७५०५०१०-११.
e-mail : ashramindia@ashram.org web-site : www.ashram.org
Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

स्वामी : अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति
प्रकाशक और मुद्रक : निलेश पटेल

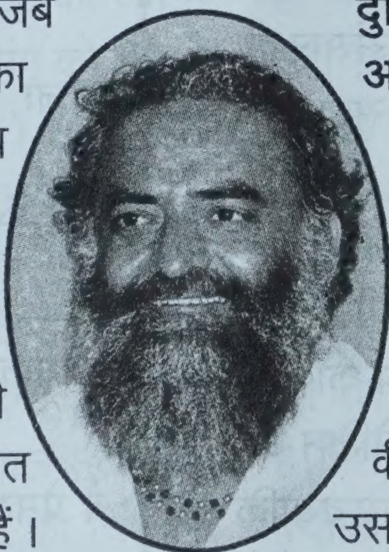
प्रकाशन-स्थल : अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग,
मोटेरा, जि. गाँधीनगर (गुज.)। पोस्ट : साबरमती-३८०००५.
मुद्रण-स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, मिठाखली, अमदावाद।
सम्पादक : सि.ना. अग्रवाल

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्र. और सदस्यता क्र. अवश्य लिखें।

अनुक्रम

मन के दास नहीं, स्वामी बनो

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)



आई. ए. एस. किया हुआ लड़का जब सरकार का होकर जीता है तो उसका बल बढ़ जाता है। कोई नेता जब राष्ट्रपति पद पर आ जाता है तो उसका बल राष्ट्रव्यापी हो जाता है। ऐसे ही जीव जब परमात्मपद में प्रतिष्ठित हो जाता है तो उसकी पहुँच ब्रह्मांडव्यापी हो जाती है। ऐसे ब्रह्मवेत्ताओं से जो दीक्षित हैं, यमराज भी उनका स्वागत करते हैं।

साध संगि धरमराइ करे सेवा ॥

(सुखमनी साहिब)

गुरुवाणी कहती है कि जिसे ब्रह्मवेत्ता गुरु मिल जायें, उन गुरुओं का संग मिल जाय तो यमराज भी उस साधक की सेवा करने को तत्पर रहते हैं, यह वह पद है परमात्मा के प्यारों का।

दुनियादार जहाँ सिर पटकते हैं।
आशिक वहाँ कदम रखते हैं ॥

दुनिया के लोग जिस सम्पत्ति और रुपयों-पैसों के लिए सिर पटकते हैं, आशिकों के कदमों में वह सम्पत्ति स्वतः ही दौड़ी चली आती है। वह उसे भी ठोकर मारे तो ऋद्धि-सिद्धियों की सम्पदा उसके पास आती है। यदि उससे भी साधक बेपरवाह रहे तो साधक परमात्मा से एक हो जाता है। फिर वह सम्पत्ति का याचक नहीं, सम्पत्ति का दाता होता है। सुख का याचक नहीं, सुख का दाता होता है। ज्ञान का याचक नहीं, ज्ञान का दाता होता है। माधुर्य का याचक नहीं, माधुर्य का दाता होता है। ऐसे दाता धरती पर कभी-कभी, कहीं-कहीं मिल

जाते हैं तो साधक-भक्त निहाल हो जाते हैं।

रामकृष्ण के रूप में दाता मिले तो नरेन्द्र निहाल हो गये। रैदास के रूप में दाता मिले थे मीरा को तो मीरा निहाल हो गयी, खुशहाल हो गयी। मतंग ऋषि के रूप में दाता मिले तो शबरी भीलन निहाल हो गयी।

मनमानी साधना करनेवाले तपस्वी तप कर-करके थक गये, उनकी जटाएँ इतनी बढ़ गयीं कि धरती को छू रही थीं लेकिन श्री राम उनके पास नहीं गये, श्री राम शबरी के आँगन में गये। वे तपस्वी भागते-भागते आये श्री राम के दीदार के लिए लेकिन श्री राम के पहले उन्हें शबरी का दीदार होता है क्योंकि शबरी को मिल गये थे मतंग जैसे दाता। आसुमल को मिल गये लीलाशाहजी दाता... **आसुमल से हो गये साईं आसाराम।**

जिसको वह ब्रह्मवेत्ता दाता मिल जाता है, ब्रह्मसुख का दाता मिल जाता है, ब्रह्मरस का दाता मिल जाता है और तत्परता से चलनेवाला भक्त-साधक चलता ही रहता है तो पाता ही रहता है, पाता ही रहता है, उसका कोई अंत नहीं क्योंकि वह अनन्त है। उसका कोई छोर नहीं। संसार का तो अंत होता है लेकिन परमेश्वर के सुख का, परमेश्वर के माधुर्य का अंत नहीं।

प्रेमरस नित्य नवीन, नित्य सुखरूप।

मनमुखता से कभी किसीको सच्ची रोशनी नहीं मिली। जैसे कोई मंत्री अपने राजा को जेल में डाल दे और उसे खाने-पीने को दे लेकिन यह कभी नहीं चाहेगा कि राजा आजाद हो जाय क्योंकि इससे मंत्री का शासन खतरे में पड़ जायेगा। ऐसे ही हे जीवात्मा ! तू राजा है और मन तेरा मंत्री है लेकिन आज तक वह मंत्री तुझे जेल में डालकर अपनी सत्ता चला रहा है, तेरी बिल्कुल नहीं चलती। मन जहाँ जाना चाहता है वहाँ जाता है, तू उसके पीछे घसीटा जाता है। मन कई जन्मों में भटकाने ले गया और तू भटकता है। अ... गुरुरूपी सम्राट मिला और तुझे कहता है कि ... भी सम्राट है। तू मन का दास मत बन, मन ... स्वामी बन। इन्द्रियों और विकारों का गुलाम म... बन, उनका स्वामी बन और स्वामी के चिन्तन ... अपना स्वामित्व जगा, स्वामी के संग से तू ... स्वामी हो जा।

जग में सतसंग बिना मानव

जग में सतसंग बिना मानव,
सन्मति गति पाना क्या जाने।
आसुरी प्रकृति के जो प्राणी,
सतसंग में आना क्या जानें॥
जीवन में जितने दुःख दिखते,
वे हैं दोषों के कारण ही।
पर जिसमें इतना ज्ञान न हो,
वह दोष मिटाना क्या जाने॥
उन्नति का साधन सेवा है,
इससे ही आत्मशुद्धि होती।
पर लोभी, अभिमानी, कामी,
सेवा को निभाना क्या जानें॥
गाँजा, अफीम या भाँग, चरस,
सिगरेट, शराब पीनेवाले।
व्यसनों को जो न छोड़ पाते,
मन वश में लाना क्या जानें॥
जिनके उर में होता रहता है,
आगे पीछे का चिन्तन।
वे प्रेमयोग बिन परमेश्वर में,
ध्यान लगाना क्या जानें॥
दुःख में जो त्यागी हो न सके,
बन सके न सुख में जो उदार।
वह पथिक साधनामय जीवन को,
सफल बनाना क्या जाने॥

शिष्य में आते हैं चार महान सद्गुण



श्री एकनाथजी महाराज

श्री एकनाथजी महाराज कहते हैं कि विषयों की नश्वरता को समझकर विषय-विकारों से छूटने के लिए सद्गुरु की शरण में जाना नितान्त आवश्यक है।

आत्मज्ञान दान करने का सामर्थ्य जिनमें है, उनका अंतिम लक्षण है उनकी शांति। उनमें पूर्ण शांति निवास करती है। अपनी उस परम शांति का लाभ सद्गुरु अपने प्रिय शिष्य को देते हैं। अतः माया से मुक्त होने की जो इच्छा करता हो, उसे सद्गुरु की शरण में जाना ही चाहिए। उनकी शरण जाने से वे भागवत-धर्मों का उपदेश करते हैं और फिर उन धर्मों के आचरण से साधक माया के बंधन से छूट जाता है।

ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के शिष्य को चार महान साधनरूपी सद्गुण प्राप्त हो जाते हैं :

(१) **निःसंगता :** ऐहिक वस्तुओं का संग न करना सबसे अच्छा है किंतु असत् संग को टालने के लिए पहले सत्संग करना चाहिए। सब प्रकार के असत् संगों में देहसंग या देहात्मबुद्धि सबसे बुरा असत् संग है। इस देहबुद्धि का नाश करने के लिए ही अवतरित हुए अध्यात्म के ज्ञाता संतों के समीप जाकर उनकी सेवा करनी चाहिए। भगवद्स्मरण, विवेक-वैराग्य जगानेवाले सत्शास्त्रों का अध्ययन, संतों के जीवन चरित्र का चिंतन-मनन करके कृतार्थ होना चाहिए।

(२) **शौचम् :** वासना के मल से मन मलिन रहता है। उसे श्रद्धेय सद्गुरु के उपदेशरूपी जल से धोना चाहिए। सद्गुरु के उपदेश के सहारे शुद्धि प्राप्त करने के बाद ही मनुष्य कृतार्थ होता है। ऐसा न करते हुए जो बाहरी स्वच्छता का स्वाँग करता है, वह ढोंगी है। जब तक अन्तर में विकल्प हैं, वासनाएँ हैं, तब तक बाह्य पवित्रता का कोई महत्त्व नहीं है।

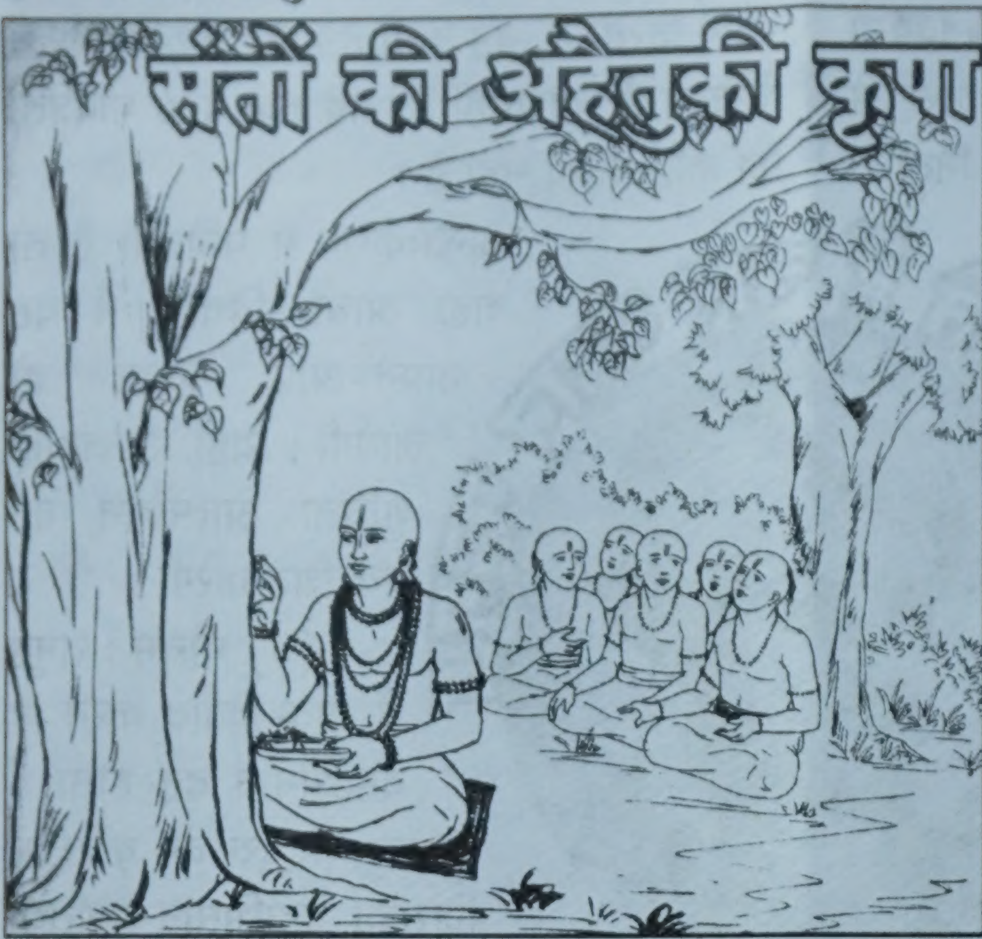
अन्तःकरण में पवित्रता है तो बाह्य आचार-विचारों में वह अपने-आप प्रकट हो जायेगी। यही अन्तर्बाह्य शुचिता आत्मज्ञान को प्रकाशित करेगी।

(३) **मौनम् :** समूह में वाद-विवाद करने से देहाभिमान दृढ़ होता है किंतु सद्गुरु की कृपा से जिसका देहाभिमान पूर्णतया नष्ट हो चुका है, उसे ऐसा प्रतीत होता है कि जिसकी भी निन्दा करें वह तो आत्मस्वरूप है। अतः सद्गुरु की कृपा से जिसकी दृष्टि सम हो गयी है, वह भक्त किसीकी निंदा नहीं करता। इसी प्रकार वह किसीकी स्तुति भी नहीं करता। सद्गुरु-कृपाप्राप्त सद्भक्त स्वतः ही मौन हो जाते हैं। उन्हें ऐसा एक भी स्थान नहीं दिखता जहाँ परमात्मा न हो। गुरु-उपदेश से जो कृतार्थ हो चुके हैं तथा जिनके चित्त में आत्मस्वरूप स्थिर हो गया है, वे स्तुति एवं निन्दा में रत नहीं होते।

इस प्रकार आत्मज्ञानी के स्वाभाविक मौन का वर्णन करते हुए श्री एकनाथजी महाराज कहते हैं कि भगवान का भजन करना भी महामौन है क्योंकि वेदों ने भी ईश्वर की स्तुति की है। परमेश्वर का नामस्मरण महामौन ही होगा।

(४) **संतोषो येनकेनचित् :** सद्गुरु से प्राप्त हुए आत्मज्ञान के कारण वह सदा सन्तुष्ट रहता है। दैव-प्रदत्त सुख-दुःख के आघातों का अनुभव करते हुए भी आत्मचिन्तन में निमग्न रहने के कारण उसकी आनन्द-वृत्ति नष्ट नहीं होती। ❑

संतों की अहैतुकी कृपा



ब्रह्मज्ञानी महापुरुष अवर्णनीय होते हैं। फिर भी भक्तों को उनके जैसा बनने के लिए प्रेरित करने हेतु शास्त्र उनके लक्षणों का वर्णन करते हुए कहते हैं :

आत्मवत् पश्येत् सर्वभूतेषु...

आत्मानुभवी सत्पुरुष सम्पूर्ण प्राणियों को अपने आत्मा के समान देखते हैं। **वसुधैव कुटुम्बकम् ।** सम्पूर्ण धरती अपना ही कुटुम्ब है- ऐसी उनकी अनुभूति होती है । लोकमांगल्य के उद्देश्य से सदा भ्रमण करते रहना लोकसंतों का सहज स्वभाव होता है । इसलिए शास्त्रों में उन्हें संसारी प्राणियों का उद्धार करनेवाले 'जंगम तीर्थ' (चलते-फिरते तीर्थ) कहा गया है। उनकी महिमा इतनी अलौकिक है कि उनकी दृष्टि किसी चिता (जलते हुए मुर्दे के धुएँ) पर पड़ती है तो उस मृत व्यक्ति की भी दुर्गति टल जाती है, वे किसी वृक्ष के नीचे बैठकर विश्राम करते हैं तो उसका भी उद्धार हो जाता है । ऐसा ही एक प्रसंग श्री रामानुजाचार्यजी के जीवन में आता है।

एक बार श्री रामानुजाचार्यजी अपने कुछ शिष्यों के साथ यात्रा कर रहे थे। वे किसी वन में एक सघन पीपल वृक्ष के नीचे ठहरे। जब आचार्य स्नानादि नित्यकर्मों से निवृत्त हुए, तब उन्होंने शिष्यों को आज्ञा दी : ''प्रपत्ति की सामग्री एकत्रित करो।''

जब कोई जिज्ञासु गुरु के शरणापन्न होता है, उनका शिष्यत्व स्वीकार करना चाहता है तो उसे 'प्रपत्ति' कहते हैं।

आचार्य की ऐसी आज्ञा सुनकर शिष्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यहाँ घोर जंगल में प्रपत्ति अर्थात् दीक्षा के लिए कोई भी व्यक्ति तो दिखायी नहीं देता। आचार्य भगवान किसे दीक्षा देंगे ? किसका संस्कार करायेंगे ? किंतु गुरु की आज्ञा सर्वोपरि है, उसके पालन में तर्क-वितर्क, ननु-नच नहीं करनी चाहिए- यही सोचकर उन्होंने चंदन, अक्षत आदि सभी उपयोगी वस्तुएँ यथाक्रम सजाकर रख दीं। आचार्य ने उस पीपल के वृक्ष को ही विधिवत् दीक्षा दी। उसे तिलक, मुद्रा लगायी, मंत्र दिया।

दीक्षा समाप्त होते ही सबने बड़े आश्चर्य के साथ देखा कि पीपल के पत्ते मुरझाने लगे। वह क्रम-क्रम से सूखता हुआ सर्वथा सूख गया।

तब शिष्यों की समझ में आया कि आचार्य ने पीपल को दीक्षित करके उसे कृतार्थ किया है।

महापुरुषों के द्वारा कैसी अहैतुकी करुणा-कृपा बरसती रहती है ! जो महापुरुष घन या क्षीण सुषुप्ति में स्थित जीवों को दृष्टि या सान्निध्यमात्र से सद्गति प्रदान करने का सामर्थ्य रखते हैं, यदि उनके हाथों में मनुष्य निखालिस भाव से अपनी जीवन-डोर सौंप दे तो उसके परम उद्धार में क्या संशय है ?

जितने यज्ञ हैं, तप हैं तथा और भी दान, धर्म, तीर्थ, व्रत हैं - ये सब जीवों को अभय देने की सोलहवीं कला के भी समान नहीं हैं और मनुष्य-जन्म प्राप्त जीव को अभय-पद की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब वह किसी आत्मनिष्ठ सद्गुरु के चरणों में सच्चे हृदय से शरणापन्न हो। □

धोखे में न रहना...

आश्चर्य है कि यहाँ पर कोई रहता नहीं, (जो जन्म लेते हैं वे मरते ही हैं) फिर भी लोग सोचते हैं कि हम सदा ऐसे ही रहें। संबंधियों से, परिचितों से इतना अपनापन हो जाता है कि जिससे पहले अपनापन था, अभी भी अपनापन है और बाद में भी अपनापन रहेगा उसका विस्मरण हो जाता है।

सूर्य बाहर का अँधेरा दूर करता है, सद्‌गुरु हमारे भीतर का अँधेरा दूर करते हैं। जिसको हम विस्मृत कर बैठे हैं उसका सुमिरन कराते हैं। गुरुदेव की वाणी हमें अपने असली घर का सुमिरन कराती है कि हम इस लोक के वासी नहीं हैं, हमारा असली घर कहीं और है परंतु जिनको समर्थ सद्‌गुरु नहीं मिलते हैं अथवा ऐसे सद्‌गुरु मिलने के बाद भी जिनके हृदय में गुरुभक्ति नहीं होती उन लोगों का बचपन, यौवन और बुढ़ापा धोखे में ही बीत जाता है। जैसे महावीर स्वामी के मिलने के बाद भी गोशालक अभागा रह गया, निंदक हो गया। महात्मा बुद्ध के मिलने के बाद भी उनका भतीजा देवदत्त निंदक हो गया, उनसे लाभ नहीं उठा पाया। सराय को ही अपना घर मानकर बेचारे जीवन पूरा करके चले जाते हैं। जो देखना चाहिए वह नहीं देख पाते और जिसे देखने का मूल्य नहीं वह देखते रहते हैं। अमूल्य को निर्मूल्य बना देते हैं। सराय, जहाँ कुछ समय तक रहना है, उसको सजाने-सँवारने में ही समय व्यतीत कर देते हैं। कितनी नासमझी है !

पिंजरे में बंद पक्षी कितने ही पंख फड़फड़ाये उड़ नहीं पाता है। उसी प्रकार जो व्यक्ति अपनी देह में ही आसक्त है वह दूसरे की देह में भी आसक्त होता है। वह चाहकर भी उड़ान नहीं भर पाता क्योंकि देहरूपी पिंजरे में बंद है। मोह-माया के पिंजरे में कैद हुआ जीव ऊँची उड़ान नहीं भर पाता।

बच्चे तो खिलौनों से खेलते हैं पर बड़े-बूढ़े भी खिलौनों से ही खेल रहे हैं। पचपन के हो जाते हैं लेकिन बचपन की ही बुद्धि रहती है। शरीर से तो वृद्ध हो जाते हैं परंतु जीवन में परिपक्वता नहीं आती। तब अपने बेटे-बेटी जो बड़े प्यारे लग रहे थे, वे ही सोचते हैं कि 'कब मरेगा ? यह मरता क्यों नहीं है ? हे भगवान ! अब कुछ कर दो।'

बचपन, यौवन और बुढ़ापा तीनों धोखे में ही बीत जाते हैं। अभी जो जवान हैं वे यह नहीं सोचते हैं कि हमारे शरीर की भी यही अवस्था होगी। लोग मोह के पिंजरे में कैद रहते हैं।

एक छोटी-सी मोमबत्ती या छोटा-सा दीपक जलाओ तो अँधेरा दूर हो सकता है, उसी प्रकार थोड़ी-सी ईश्वर की, गुरु की कृपा हमारा अज्ञानरूपी अँधेरा दूर कर सकती है। छोटी-सी चिनगारी में विराट शक्ति छुपी है। जैसे दीया जलाते हैं तो अँधेरा यह नहीं कहता कि 'मैं वर्षों से यहाँ रहता हूँ, कैसे जाऊँ ?' दीया जलाते ही अँधेरा भाग जाता है। ऐसे ही गुरुकृपा उतरते ही शिष्य के अज्ञानांधकार का नाश हो जाता है।

गुरु में भक्ति बढ़ाते जायें। भक्ति में आणविक शक्ति है। भक्ति में संतोष मत करना। धन में और भोग में संतोष करना चाहिए, खाने-पीने में संतोष करना चाहिए। बस पेट भरने के लिए भोजन मिल गया तो जो मिला सो वाह-वाह... जरूरी नहीं है कि स्वादिष्ट भोजन ही मिले।

भक्ति आये उसके लिए जरूरी है कि जैसा गुरु कहते हैं वैसा करते जायें।

- श्री सुरेशानंदजी के प्रवचन से ❐

रज्जबजी की गुरुभक्ति



संत दादूजी के प्रिय शिष्य रज्जबजी गुरुसेवा, सत्संग और ईश्वर-भजन में सदा तत्पर रहते थे। वे स्वयं भी कथा करते थे, जिसको सुनकर दादूजी भी हर्षित होते थे। एक बार रज्जबजी एक पंडित की कथा में गये। उसका दृष्टांत देने का तरीका उन्हें बहुत अच्छा लगा। 'मुझे ऐसे दृष्टांत देना कैसे आये ?'- यह सोचकर वे कुछ उदास थे। दादूजी ने उदासी का कारण पूछा तो रज्जबजी ने विनयपूर्वक सारी बात कह दी। अपने प्रिय शिष्य की अभिलाषा पूर्ण करने के लिए दादूजी ने उन्हें वरदान दिया कि ''तुमको इस विषय में उस पंडित से भी अच्छी योग्यता प्राप्त हो जायेगी।'' संत दादूजी के आशीर्वाद से रज्जबजी दृष्टांत देने में बहुत निपुण हो गये। इस विषय में उनकी वाणी ही प्रत्यक्ष प्रमाण है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

'श्रेष्ठ गुरु के संग से मन स्थिर हो जाता है। जैसे कुएँ की छाया कुएँ में ही रहती है बाहर नहीं निकलती, वैसे ही गुरु-उपदेश सँभला मन विषय-विकारों में न जाता, ब्रह्मचिंतन में ही स्थिर रहता है जैसे काम को हनुमानजी ने जीत लि था, वैसे ही गुरुकृपा से शिष्य मन व कामुक वृत्तियों को जीत लेता है। जै लोहे की नाल लगे हुए घोड़े के प चुम्बक पत्थर पर पड़ जाने से घो वहाँ से चल नहीं सकता है, वैसे गुरु-उपदेश से संतोष पर आरूढ़ जाने से शिष्य का मन सांसारिक विष के लिए नहीं दौड़ता है। जैसे समुद्र जहाज को त्यागकर काक पक्षी नहीं ज सकता, वैसे ही गुरु-उपदेश से निग्रही शिष्य का मन ईश्वर-नाम का त्या नहीं करता। जैसे गरुड़जी के पंजे आया हुआ सर्प नहीं निकल सकता, वैसे ही गु के विचाररूप हाथ में आया हुआ सच्चा शिष्य व मन कुविचार में नहीं जा सकता।'

एक बार दादूजी लकड़ी की चौकी पर स्ना कर रहे थे। स्नान के बाद उन्होंने रज्जब कहा : ''रज्जब ! जरा मेरी खड़ाऊँ तो ले आओ जिससे पैरों में मिट्टी न लगे।''

रज्जबजी ने सोचा कि 'महाराज का शर तो बहुत कृश है, मैं अभी आसन पर ले ज धरूँगा।' उन्होंने कहा : ''महाराज ! आप चौ पर ही विराजे रहें। मैं चौकीसहित ही आपक आसन पर ले चलता हूँ।''

दादूजी ने अपने प्रिय शिष्य के हृदय में उठ अभिमान के अंकुर को देख लिया। रज्जबजी चौकी को उठाने के अनेक प्रयास किये पर व हिली तक नहीं। रज्जबजी पसीना-पसीना ह गये। आखिर उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर गुरु चरण पकड़े और क्षमा माँगते हुए खड़ाऊँ लाक

पहना दीं। दादूजी रज्जबजी के अभिमान को नष्ट करने के लिए बहुत भारी बन गये थे।

रज्जबजी ने सवैया रचा :

हिलै न चलै न पिलै न ठिलै,
ऐसो रोपि रह्यो बलबंड विहारी।
अटै न मिट्यो न बट्यो न लुट्यो,
अजु माया रु मान गये पचिहारी ॥
हिलायो चलायो डुलायो न डोल ही,
देख हु साधु सुमेरु तैं भारी।
हो दादू व साधू व आदि अनादि शिरोमणि,
रज्जब देखि भयो बलिहारी ॥

अर्थ : 'कामादि से हिलते नहीं, आशा से चंचल नहीं होते, कर्म के धक्के से तथा दुर्जन के ढकेलने से अपनी निष्ठा से हटते नहीं हैं। ज्ञान बल के बली हैं, पृथ्वी पर विचरते हैं किंतु इस समय तो चौकी को पृथ्वी में रोपकर ऐसे स्थित हैं कि हिलाने से हिलते नहीं, चलाने से चलते नहीं और डुलाने से डुलते नहीं, संतजनो ! देखो तो सही ये गुरुदेव दादूजी तो आज सुमेरु से भी भारी हो गये हैं। ये जन्मादि संसार में भ्रमण करते, काल के द्वारा मिटते नहीं। इनका मन विषयों में वितरित नहीं होता। इनके ज्ञान-धन को कामादि नहीं लूट सके हैं। अजी देखो, इनको जीतने के लिए माया और अभिमान पचकर इनसे हार गये हैं। हे संतजनो ! ये दादूजी तो सबके आदि अनादि सबके शिरोमणि ब्रह्मरूप ही हैं। मैं इस समय इनकी महान शक्ति देखकर इन पर बलिहारी जाता हूँ।'

जैसे एक मूर्तिकार छेनी-हथौड़ी से अनगढ़ पत्थर को तराशकर मनोहर मूर्ति बना देता है, वैसे ही सद्गुरु शिष्य को अपनी कृपापूर्ण निगरानी में रखकर उसमें छुपा भगवद्तत्त्व प्रकटाते हैं। फिर शिष्य के हृदय से गुरु की महिमा एवं उनके स्वरूप का मार्मिक वर्णन प्रस्फुटित होने लगता है। रज्जबजी लिखते हैं :

'चंद्रमा यह नहीं चाहता कि मुझे देख के कुमुद खिलें परंतु चंद्रमा के उदय होते ही कुमुद अपने-आप ही खिल जाते हैं, वैसे ही गुरु यह इच्छा नहीं करते कि मेरे दर्शन से कोई प्रसन्न हो किंतु गुरुदेव को देखते ही भक्तों का हृदय आप ही विकसित हो जाता है। कमल भौंरों को कब बुलाता है ? वे तो सुगंध द्वारा अपनी तृप्ति के लिए अपने-आप ही आते हैं। वैसे ही गुरु शिष्य बनने के लिए कब प्रेरणा करते हैं ? किंतु गुरु-ज्ञान द्वारा अपनी तृप्ति के लिए सज्जन, बुद्धिमान, पुण्यात्मा अपने-आप ही आकर शिष्य बन जाते हैं। चंदन यह कब चाहता है कि सर्प आकर मुझ पर लिपटें ? किंतु सर्प अपने विष की जलन को शांत करने के लिए अपने-आप ही आकर लिपटते हैं। वैसे ही गुरु यह प्रेरणा कब करते हैं कि तुम मेरे पास आकर शांति प्राप्त करो किंतु त्रिविध ताप से तप्त लोग अपनी शांति के लिए अपने-आप ही गुरु की शरण लेते हैं।

समुद्र नदियों की आशा नहीं करता किंतु वे सब अपनी वृद्धि के लिए अपने-आप ही समुद्र में प्रवेश करती हैं। वैसे ही सच्चे गुरु यह आशा नहीं करते कि सब मेरे सिद्धांत में ही आयें परंतु प्रगतिशील मानव-समाज अपनी पारमार्थिक उन्नति के लिए गुरु के उत्तम सिद्धांत में अपने-आप ही प्रवेश करते हैं। गुरुदेव तो संतोषपूर्वक स्वस्वरूप में स्थित हैं, उनको किसी प्रकार की इच्छा नहीं है परंतु जो शिष्य उनके द्वारा ज्ञान प्राप्त करके मुक्त होने को जन्मा है वह उनके पास आप ही आ जाता है। भाव यह है कि गुरु पूर्णकाम होते हैं, वे यदि शिष्य के साथ विशेष व्यवहार नहीं भी रखें तो भी शिष्य को उनसे कभी उपराम नहीं होना चाहिए।' ❑

'मुर्शिद' क्या करते हैं ?

– ब्र. वेदांतकेसरी स्वामी निर्मलजी महाराज

गुरुचरणों में अर्पित हृदय ही आध्यात्मिक साधना-पथ पर आरूढ़ हो सकते हैं। 'गुरु' शब्द में एक ऐसी अलौकिकता है जो सर्वदा ध्रुव और अटल है। 'गुरु' शब्द कभी भी परिवर्तित नहीं होता। प्राकृतिक नियमानुसार संसार की प्रत्येक वस्तु घटती और बढ़ती है। हर क्षण तेजी से बदलता है परंतु 'गुरु' शब्द हमेशा गुरु ही है, किसी युग में भी लघु नहीं होता।

दीक्षित हृदय में 'गुरु' शब्द के प्रति श्रद्धा और भावना होती है तथा वह हृदय वास्तविक शक्ति एवं आनंद के गुप्त रहस्य को जान जाता है। वह अपनी भावना के कदमों से चलकर अपने लक्ष्य-पथ की रुकावटों को दूर करता हुआ अपने आत्मस्वरूप का साक्षात्कार कर लेता है।

एक दीक्षित होता है और एक शिक्षित। गुरु के बिना संसार में कोई भी दीक्षित नहीं होता, शिक्षित होने के तो विश्व भर में स्कूल-कॉलेज बहुत हैं परंतु दीक्षित होने के लिए नहीं। शिक्षा मानव को प्रतिभाशाली, योग्य तथा उच्च पदवियों के योग्य तो बनाती है परंतु जीवन के वास्तविक लक्ष्य के गुप्त रहस्य का उद्घाटन नहीं करती। यदि मानव शिक्षित होने के साथ-साथ दीक्षित भी हो तो उसमें अन्तर्प्रेरणा, अन्तर्सजगता होती है।

जिन शिक्षितों को इन्द्रियों के विषय तथा वासनाएँ घेर लेती हैं, जिनका मस्तिष्क और हृदय संतुलनरहित हो जाता है उनको दीक्षा संयम सिखाती है। वैसे तो शिक्षा भी एक शक्ति है परंतु दीक्षा तो ऐसी है जैसे बुझे हुए दीपक में ज्योति जल उठती है, चहुँओर का अंधकार नष्ट करके सही मार्ग दर्शाती है, सुखी, प्रसन्न और परमात्म-स्वभाव में जगाती हैं। संसार में जो सुखी है वही प्रसन्न है, जो प्रसन्न है उसके पीछे पुण्य है। पुण्य वही कर सकता है जिसके पीछे त्याग है। त्याग वही कर सकता है जिसके पास विचार है विचार वही कर सकता है जिसके पास दीक्षा है दीक्षित वही है जिसके हृदय में गुरु हैं। जिस साथ गुरु हैं वही सुखी है। वही सच्चे, शाश्व सुख का अधिकारी होता है, मुक्तात्मा, मह आत्मा बनता है।

'मुर्शिद' (गुरु) शब्द में उर्दू के चार अक्ष होते हैं। मीम, रे, शीन और दाल।

'मीम' अक्षर मुरव्वत (गुरुकृपा) के लि आता है। गुरुलोग अपनी सब प्रकार की आसवि का त्याग करके, विवेक-वैराग्य के आभूष पहनकर गोशा-ए-तन्हाई (एकांत) में अप निजात्मस्वरूप की पहचान करते हैं, फिर वे अप अनुभव से शिष्यों को भी अपनी दिव्य दृष्टि तथ अपने अनुभव प्रदान करते हैं। यही है उनकी कृपा

दूसरा अक्षर है – 'रे'। 'रे' अक्षर रियाज (बंदगी) के लिए आता है। मुर्शिद लोग शिष को इबादत करने का ढंग समझाते हैं, जिस शिष्य आत्मज्योति की झलक पाकर कृतकृत हो जाता है।

तीसरा अक्षर है – 'शीन'। 'शीन' अक्ष शौक के लिए है। गुरुलोग शिष्य के हृदय में बंद करने की तथा स्वयं को जानने की जिज्ञास कुतूहल तथा शौक पैदा करते हैं।

चौथा अक्षर है – 'दाल'। 'दाल' अक्षर व मतलब दर्द से है। जब आध्यात्मिक पथ प चलनेवाले पथिक को मार्ग में कई आंतरिक तथ बाह्य बाधाएँ आ घेरती हैं तो गुरुलोग जिज्ञासु हृदय में दर्द तथा तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न करते है जिससे उसकी रुकी हुई यात्रा सुधर जाती और यही दर्द ही उसका रहनुमा (पथप्रदर्शक बन जाता है।

गुरु शिष्य के हृदय में ये चारों ही ची जागृत करते हैं, इसलिए उन्हें 'मुर्शिद' कहते हैं गुरु मानव-जीवन को साक्षर नहीं करते, सार्थ करते हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर

अनाथ बालक बना विख्यात कवि



सन् १६३५ में बड़ौदा (गुज.) में कृष्णराम भट्ट के यहाँ एक बालक जन्मा जिसका नाम रखा गया 'प्रेमानंद' ।

प्रेमानंद अभी छोटा ही था कि उसके सिर से पिता का साया हट गया । कुछ ही समय बाद माँ भी चल बसी । मातृ-पितृविहीन वह बालक सगे-संबंधियों के यहाँ पला-बढ़ा । किसीका भी प्रेम उसे प्राप्त न हुआ, न ही उसे उचित शिक्षा ही मिल सकी । लोगों की गालियाँ, मार, ताने सहता हुआ वह इधर-उधर भटका करता । जहाँ जाता लोग उसे पागल और मूर्ख कहकर दुत्कार देते । इसी तरह वह १४ वर्ष का हो गया ।

एक दिन बड़ौदा में एक ब्रह्मज्ञानी महापुरुष पधारे । प्रेमानंद को पता चला तो वह तुरंत उन संत के चरणों में पहुँच गया व तन-मन से उन महापुरुष की अथक सेवा करने लगा । महापुरुष उसकी सेवा से प्रसन्न थे । जिस दिन उन्हें वहाँ से प्रस्थान करना था उसके एक दिन पहले उन्होंने प्रेमानंद को बुलाकर कहा : ''बेटा ! कल भोर होते ही मुझे मिलना ।''

''जो आज्ञा !'' कहकर प्रेमानंद घर लौट आया । सुबह उसे उठने में देर हो गयी । उठते ही उसे गुरुजी की बात याद आयी । वह मंदिर की ओर दौड़ा पर संत तो वहाँ से जा चुके थे । जिस दिशा में संत गये थे उसी दिशा में दौड़ा । थोड़ी दूर जाने पर उसे संत मिल गये । वह उनके चरणों में गिर पड़ा और विलम्ब के लिए क्षमा-प्रार्थना करने लगा । संत ने उसे उठाया और उसके सिर पर हाथ फेरने लगे । उन्होंने उसकी जिह्वा पर कुछ लिखा और कृपापूर्ण नेत्रों से उसे देखते हुए बोले : ''तू जरा जल्दी आता तो संस्कृत भाषा का सर्वश्रेष्ठ कवि बनता पर अब तू प्राकृत भाषा (गुजराती) में कविता कर सकेगा ।''

संत का आशीर्वाद पाकर उनके श्रीचरणों में नमन कर प्रेमानंद घर वापस आ गया । संत के आशीर्वाद से उसकी लेखनी में साक्षात् माँ शारदा विद्यमान हुईं और हृदय में कवित्व शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ । संतकृपा के प्रताप से एक अनाथ बालक कवि प्रेमानंद के नाम से विख्यात हुआ । 'ओखा हरन, नलाख्यान्' आदि उसकी अनेकों प्रसिद्ध रचनाएँ हैं । ❐

(पृष्ठ १० का शेष)

गुरु की महिमा का वर्णन कठिन ही नहीं वरन् जितना भी किया जाय कम है । जो जिज्ञासु ईश्वरप्राप्ति की जिज्ञासा रखता है वह धन्य तो है ही परंतु पूर्ण गुरु प्राप्त होने पर तो वह धन्य-ही-धन्य है !

भगवान शिवजी के निम्नलिखित वचन ही यहाँ संतवाणी में प्रकट हुए हैं :

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः ।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ॥

'जिसके अंदर गुरुभक्ति हो उसकी माता धन्य है, उसका पिता धन्य है, उसका वंश धन्य है, उसके वंश में जन्म लेनेवाले धन्य हैं, समग्र धरती माता धन्य है ।' **(श्रीगुरुगीता : ३.१५०)** ❐

सहशिक्षा के खिलाफ छिड़ा बुलंद आंदोलन

अमेरिकन विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को अलग-अलग कक्षों में शिक्षा देने के विषय में बड़ा आंदोलन शुरू हुआ है । 'नेशनल एसोसिएशन ऑफ सिंगल सेक्स पब्लिक एज्यूकेशन' संस्था की भी स्थापना की गयी है। इस संस्था के प्रयासों से अमेरिका में केवल छात्रों या छात्राओं को शिक्षा देनेवाले विद्यालयों की संख्या जो सन् १९९८ में ४ थी आज बढ़कर २२३ तक पहुँच चुकी है । आंदोलनकारी अब सहशिक्षा से संबंधित कानून में परिवर्तन की माँग कर रहे हैं। सरकार कानून बदलने को तैयार हो गयी है ।

आंदोलनकारी कहते हैं कि लड़के-लड़कियों को अलग-अलग समूहों में शिक्षा दी जाय तो उनके व्यवहार में सुधार व एकाग्रता में वृद्धि होती है । इस कारण कई विद्यालय अपना परिणाम सुधारने के लिए भी लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग वर्गों का निर्माण कर रहे हैं । इस कारण अमेरिकी अभिभावक भी प्रसन्न हैं ।

'वूडवर्ड' विद्यालय की सहशिक्षावाली कक्षा में ५७ प्रतिशत लड़कियाँ और ३७ प्रतिशत लड़के लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे । उसकी तुलना में जिस कक्षा में लड़के-लड़कियाँ अलग-अलग पढ़ रहे थे उसमें लगभग ७५ प्रतिशत लड़कियाँ और ८६ प्रतिशत लड़के लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे । लड़कों के उत्तीर्ण होने के प्रमाण में दूने से भी अधिक वृद्धि देखी गयी ।

अपने देश में सहशिक्षा का विचार पश्चिमी देशों के अंधानुकरण से ही आया था। भारत की प्राचीन गुरुकुल पद्धति में विद्यार्थी-अवस्था को 'ब्रह्मचर्य आश्रम' के रूप में देखा जाता था । जीवन के प्रारंभिक २५ वर्षों तक विद्यार्थी गुरु के आश्रम में जाकर पढ़ते थे । कन्याओं को सारी शिक्षा घर पर ही सुरक्षित वातावरण में दी जाती थी। इससे संयम द्वारा रज-वीर्य की रक्षा होकर युवान-युवतियाँ तेजस्वी बन के बहुप्रतिभासंपन्न हो जाते थे ।

स्त्री-पुरुषों में प्रकृति ने जो भिन्नता बनायी है उसी अनुसार हमारी समाज-रचना में भी स्त्री-पुरुषों को अलग-अलग दायित्व सौंपा गया है । इसके अनुसार पुरुष का कार्य अर्थोपार्जन करना तथा बाह्य व्यवहारों को सँभालना है। दूसरी तरफ स्त्री को घर की देखभाल करना, बच्चों का पालन करना व उन्हें सुसंस्कार देना तथा बड़ों का ध्यान रखना इस प्रकार का दायित्व सौंपा गया है ।

आधुनिक शिक्षा के ढाँचे में स्त्री और पुरुष को एक ही प्रकार की शिक्षा दी जाती है । इससे आज अनेक सामाजिक विषमताएँ पैदा हो रही हैं । आज स्त्रियाँ भी नौकरी योग्य या व्यावसायिक शिक्षण प्राप्त कर रही हैं, फलस्वरूप पैसे कमाने की जिम्मेदारी उनके सिर पर आ गयी है । यह जिम्मेदारी सँभालने के उपरांत भी गृहकार्य और बच्चों के पालन-पोषण की जवाबदारी भी स्त्री को निभानी ही पड़ती है । इस प्रकार नौकरी करनेवाली महिलाएँ दोहरे बोझ के नीचे दबी जा रही हैं। उनमें अवसाद (डिप्रेशन) जैसी मानसिक बीमारियाँ बढ़ गयी हैं । वे अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरी तरह निभा नहीं पा रही हैं। इससे उनके पति, बालकों और घर के बड़ों के प्रति भी अन्याय हो रहा है । आज जो अनेक परिवार टूट रहे हैं उसके लिए सहशिक्षा द्वारा स्त्रियों को दी जानेवाली नौकरी या व्यवसाय संबंधित शिक्षा ही मुख्य रूप से जिम्मेदार है ।

हमारे देश में जिस प्रकार पुरुषों को ७२ कलाओं का शिक्षण दिया जाता था उसी प्रकार स्त्रियों को ६४ कलाएँ सिखायी जाती थीं । इन ६४ कलाओं में स्वस्थ जीवन जीने के लिए आवश्यक तमाम कलाओं का समावेश था । इन कलाओं के द्वारा स्त्री (शेष पृष्ठ १४ पर)

यौन-शिक्षा नहीं, योग-शिक्षा

गुजरात राज्य सरकार ने केन्द्र की 'यौन-शिक्षा'को ठुकराकर योग-शिक्षा प्रारम्भ करने का निर्णय लिया है। कक्षा ८ से १० में प्रार्थना, अष्टांगयोग, योगासन, सूर्यनमस्कार, प्राणायाम, त्राटक, ध्यान और षट्क्रियाएँ जैसे योग के १२ प्रकरण जोड़े गये हैं। दूसरी तरफ मानव-प्रजनन जैसे १७ प्रकरण हटा दिये गये हैं। अन्य राज्य सरकारों के लिए भी यह प्रेरणा लेने जैसा है। भारत के ऋषियों द्वारा खोजी गयीं योग की विविध प्रणालियाँ मानव की सुषुप्त शक्तियों को जगाकर उसका बहुआयामी विकास करती हैं। बच्चों में बाल्यकाल से ही योग-शिक्षा उनके जीवन में चार चाँद लगा देगी। ❐

खुल रहे हैं ५५० नये कत्लखाने

सरकार ११वीं पंचवर्षीय योजना में ५५० बड़े कत्लखाने लगाने के लिए ३५०० करोड़ रुपये का प्रविधान कर रही है। सूत्रों के मुताबिक भारत से मुसलिम तथा पश्चिमी व यूरोपीय देशों में मांस का निर्यात लगातार बढ़ रहा है। वजह यह है कि जो गाय आदि का मांस अमेरिका, हॉलैंड, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में मिलता है वह उतना स्वादिष्ट व पौष्टिक नहीं होता है क्योंकि पशुओं का वजन बढ़ाने व अधिक लाभ कमाने के लिए उनको मांस आदि खिलाया जाता है। इसीके चलते कई देशों में गायों में पागलपन की बीमारी फैल गयी थी, जिस कारण हजारों गायों को मार दिया गया था। भारत की गायों, भेड़ों को मांस नहीं खिलाया जाता, इसलिए इनको वैसे रोग नहीं होते। इनका मांस भी स्वादिष्ट होता है। विदेशों में इनकी बढ़ती माँग को देखकर कई व्यापारी बूचड़खाने खोलने में लगे हैं।

वैज्ञानिक शोधों के अनुसार छटपटाते जानवरों की आह प्राकृतिक आपदाओं (भूकंप आदि) को निमंत्रण दे रही है परंतु धन के लोभ में इस तरफ से भी जानबूझकर आँखें बंद कर ली गयी हैं। ❐

अश्लील वस्त्रों के खिलाफ अभियान

अमेरिका में विंडी शालिट नामक एक युवती ने एक आंदोलन छेड़ा है जिसका नाम है 'गर्ल्स गोन माइल्ड'। इस अभियान से जुड़ी लड़कियों ने अर्धनग्न, फूहड़ कपड़ों को छोड़कर मर्यादापूर्ण वस्त्र पहनने शुरू किये हैं। जो लड़कियाँ फूहड़ वस्त्र पहनकर कॉलेज आती हैं उनका वे संगठित होकर विरोध करती हैं। जो दुकानदार अश्लील चित्र छपे हुए वस्त्र बेचते हैं वे उनका भी बहिष्कार करती हैं। वे लड़कियाँ विवाह होने तक ब्रह्मचर्य-पूर्वक रहने का संकल्प भी लेती हैं।

अमेरिकन युवतियों को सुसंस्कारी बनाने के लिए दर्जनों वेबसाइटें शुरू की गयी हैं। जिनके द्वारा युवतियों को मर्यादित वस्त्र पहनने व जातीय संबंधों से दूर रहने की प्रेरणा दी जाती है।

शालिट को हजारों युवतियों के पत्र प्राप्त हुए, जिनके आधार पर वे कहती हैं कि 'जो युवतियाँ बेफाम होने का दिखावा करती हैं, वे अंदर से खुश नहीं हैं।'

भारत की जो माताएँ-बहनें पाश्चात्य रंग-रोगन व फैशन-प्रधान जीवनशैली का अनुसरण करने में गौरव मानती हैं, उन्हें अब इस भुलावे से बाहर आ जाना चाहिए। फैशनेबल वस्त्र पहनने से वास्तविक सुख-सौंदर्य का कोई संबंध नहीं है, सच्ची सुंदरता तो व्यक्ति का उज्ज्वल चरित्र है। माता-पिता व गुरुजनों का आदर, इन्द्रियों का संयम, मधुर भाषण, ब्रह्मचर्य, उच्च विचार, सदाचार, प्रभुप्रीति जैसे सद्गुणों से सुशोभित व्यक्ति ही सच्चा सौंदर्यवान है।

बाहर से कुरूप दिखनेवाले अष्टावक्र, शरीर में आठ वक्र होने पर भी सच्ची सुंदरता के धनी थे। बाहर से दिखने में सुकरात कुरूप थे लेकिन सत्संग के ज्ञान से इतने सुंदर हुए कि बड़े-बड़े सुंदर भी उनका सम्मान करके अपना भाग्य बनाते हैं। ❐

जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह (द्वितीय) एक वेश्या में आसक्त थे। एक दिन वे सिंहासन पर बैठे हुए थे, उनके बगल में वेश्या नन्ही भगतन बैठी हुई थी।



तभी संदेशवाहक ने राजा को सावधान किया : ''महाराज ! संन्यासी दयानंद पधार रहे हैं।''

दयानंदजी का नाम सुनते ही जसवंतसिंह के हाथ-पाँव फूल गये। जसवंतसिंह ने शीघ्र पालकी मँगवायी और वेश्या को जाने को कहा। जल्दबाजी में पालकी एक ओर झुक गयी। जसवंतसिंह ने आगे बढ़कर पालकी को सँभालने के लिए कंधा दे दिया। ठीक उसी समय ऋषि दयानंदजी वहाँ पधारे। महाराजा को वेश्या की पालकी को कंधा देते देखकर दयानंदजी ने सिंहगर्जना की : ''सिंहों के सिंहासन पर कुतिया का राज ! इन कुतियों से कुत्ते ही पैदा होंगे।''

सारा दरबार थर्रा उठा। दयानंदजी वहाँ से लौट गये।

'एक संन्यासी की यह मजाल !'- वेश्या नन्ही भगतन नागिन की तरह फुफकार उठी। वह अपने अपमान का बदला लेने का अवसर ढूँढ़ने लगी।

नन्ही ने स्वामी दयानंदजी के रसोइये जगन्नाथ को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया। उसके कहने पर जगन्नाथ ने एक रात को प्राणहारी विष दूध में मिलाकर दयानंदजी को पिला दिया।

दयानंदजी के शरीर में विषम दाह उत्पन्न हुआ। शरीर में जगह-जगह छाले पड़ गये। बहुतेरे प्रयत्न किये गये पर कोई इलाज कारगर न हुआ और ३० अक्टूबर १८८३ को दयानंदजी ने शरीर छोड़ दिया।

इन उदारहृदय महापुरुष ने अपने प्राणहर्ता को भी क्षमा कर दिया पर प्रकृति ऐसे अपराधियों को नहीं छोड़ती।

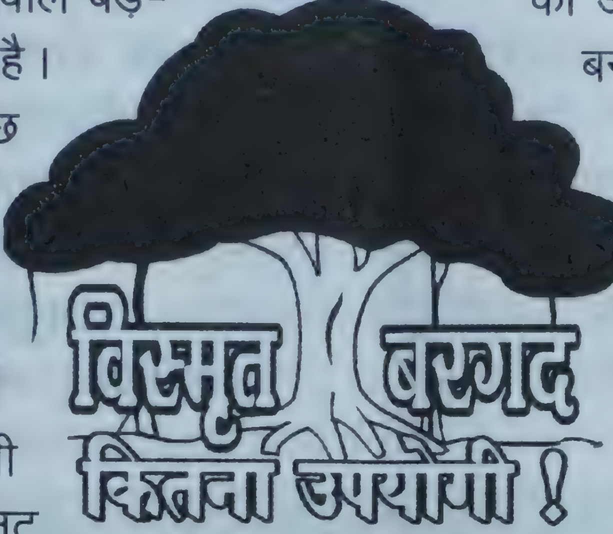
नन्ही भगतन को अपने पापकर्म का परिण शीघ्र मिला। उसे खूनी बवासीर हुई, इतना नहीं और भी कई भयंकर रोगों उसे घेर लिया। अपने बचे जीवन में नन्ही ने पृथ्वी पर नरक भोगा। जगन्नाथ का भी बु हाल हुआ। महाराजा जसवंतसि भी शीघ्र मर गये। उनके प्रतापसिंह ने नन्ही भगतन उसके चमचों को महल से निका बाहर किया। २४ जुलाई १९०९ को वह रोग यंत्रणा से घिरी हुई काल के गाल में समा गयी

संत-महापुरुष अपने उपदेश-वचनरूपी पुष् से समाज को महकाते हैं तो कुछ विचारहीन लो उनके पथ में काँटे बिछाते हैं। भगवान श्री राम के गुरु वसिष्ठजी के समय में भी ऐसे लोग विद्यम रहे होंगे तभी तो वसिष्ठजी को कहना पड़ा : ' रामजी ! अज्ञानी जो कुछ मुझे कहते हैं सो मैं स जानता हूँ परंतु मेरा दया का स्वभाव है। इससे चाहता हूँ कि किसी प्रकार वे नरकरूप सागर निकलें। इसी कारण मैं उपदेश करता हूँ।''

जिन्होंने संतों को कष्ट पहुँचाने का प्रया किया है उनका सर्वनाश हुआ है, इतिहास इ बात का साक्षी है।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

(पृष्ठ १२ का शेष) अपने समग्र परिवार की भ प्रकार देख-भाल कर सकती थी और अप व्यक्तित्व का विकास भी कर सकती थी। आ के कॉलेजों में पढ़नेवाली युवतियाँ इन ६४ कला में से मुश्किल से २-४ कलाओं का शिक्षण प्राप् कर पाती होंगी। इस प्रकार वास्तव में उन्हें शिक्षा मिलनी चाहिए उससे तो वे वंचित ही जाती हैं। हमारे शिक्षाशास्त्रियों को इस दिशा खुले दिल से विचार करना ही पड़ेगा।



अवधूत के समान खड़े बरगद (बड़) को देखते ी मन तनावरहित, विश्रांत होने लगता है । इसकी ीतल छाया प्रचुर प्राणवायु से भरी होने के कारण न-मन में ताजगी-स्फूर्ति भर देती है । बरगद ा प्रत्येक अंग कई गंभीर बीमारियों को सहज ही ूर कर डॉक्टरों के पीछे होनेवाले बड़े-ड़े खर्चों से हमें बचा सकता है ।

बरगद से संबंधित कुछ ारल प्रयोग इस प्रकार हैं :

१. स्वप्नदोष की बीमारी ूर करने व धातुपुष्टि के लिए रगद के दूध की पाँच बूँदें तासे में डालकर प्रातः खाली ट खायें । सूर्योदय से कुछ मिनट हले लें तो और अच्छा रहेगा ।

टिप्पणी : बड़ के पत्ते के डंठल में सूर्योदय े पूर्व दूध ज्यादा मात्रा में निकलता है ।

२. पुरुषों में शुक्राणुओं की संख्या कम होने र बड़ के फल का चूर्ण व अश्वगंधा चूर्ण समभाग ेलाकर २-३ ग्राम मिश्रण घी, मिश्री के साथ ाटकर ऊपर से देशी गाय का २०० मि.ली. दूध ीयें । जब तक रोग ठीक न हो जाय, तब तक यह योग हर महीने २१ दिन करें ।

३. गर्भ ठहरे इस हेतु स्त्रियों को ऋतुकाल में ाठ वटशृङ्ग (बड़ के दो कोमल पत्तों के बीच का वीन अंकुर) खाना चाहिए अथवा बड़ के फल ा २ ग्राम चूर्ण घी-मिश्री के साथ गर्भस्थापन क खाते रहना चाहिए ।

४. बड़ की अंतर छाल (छाल के भीतर की ोमल छाल) या उसके साथ निम्नानुसार अन्य ौषधियाँ मिलाकर बनाया गया काढ़ा विभिन्न ोगों में लाभदायी होता है ।

काढ़ा बनाने की विधि : १० ग्राम औषधि बड़ की अंतर छाल आदि) का मोटा चूर्ण २०० ाम पानी में आठ घंटे भिगोकर रखें । तत्पश्चात् ५० ग्राम पानी शेष रहने तक उबालें, फिर ठंडा करके पीयें ।

(अ) श्वेतप्रदर में बड़ की अंतर छाल का काढ़ा पीयें ।

(आ) रजोनिवृत्ति (menopause) में आर्त्तव ज्यादा आता हो तो बड़ की अंतर छाल व अशोक की अंतर छाल समभाग लेकर काढ़ा बनायें व मिश्री मिलाकर दिन में एक या दो बार लें ।

(इ) घाव साफ करने के लिए बड़ की अंतर छाल के काढ़े का प्रयोग करें ।

(ई) मुँह में छाले पड़े हों तो बड़, पीपल व नीम की अंतर छाल और चमेली के पत्ते समभाग लेकर काढ़ा बनायें । उससे सुबह-शाम नियमित गरारे करें, साथ ही आश्रम-निर्मित प्रवालपिष्टीयुक्त गुलकंद दूध के साथ लें अथवा गुलाब-शरबत का सेवन करें ।

५. अल्सरेटिव कोलाइटिस में बड़ के कोमल पत्ते व दूर्वा घास का रस शहद एवं मिश्री के साथ सुबह-शाम लें, साथ ही वैद्य के बताये अनुसार परहेज भी करें ।

६. दाँतों में सड़न हो तो उन पर बड़ का दूध लगायें ।

७. हाथ-पैरों में चीरे पड़े हों तो उनमें बड़ का दूध नियमित रूप से भरें ।

८. बिच्छू या चूहे के काटने पर बड़ का दूध लगायें ।

९. चाकू जैसी तीक्ष्ण धारवाली वस्तुओं से घाव होने पर बहते हुए खून को बंद करने के लिए बड़ का ताजा दूध घाव में भरकर ड्रेसिंग करें । इसके दूध में हीलिंग एजेन्ट होने से घाव जल्दी सूखता है । बड़ के दूध में वेदना को हर लेने का भी अद्भुत गुण है ।

१०. पेट में कीड़े हों तो बड़ की जटाओं के कोमल अंकुर पीसकर उसका १/२ से २ चम्मच

रस आयु-अनुसार दें।

११. विचर्चिका (एक्जिमा) में बड़ के पके पत्ते जलाकर उसकी राख तिल के तेल में मिलाकर लगायें।

१२. स्तन्यशैथिल्य में बड़ की जटा को पीसकर लेप करें।

वटवृक्ष का आध्यात्मिक महत्त्व भी है। सभी संत श्री आसारामजी आश्रमों में वटवृक्ष लगाये गये हैं, जिनमें पूज्य बापूजी ने आध्यात्मिक शक्ति का संचार किया है। लोग दूर-दूर से आकर 'बड़दादा' की परिक्रमा करते हैं, जिससे सुख-शांति मिलती है, कइयों की मनोकामना पूर्ण भी होती है। ❑

(पृष्ठ १७ का शेष) रायकेरा जि. सिमडे (झारखंड), मुजफ्फरपुर (बिहार), हुन्नरदेव जि कारवाड़ (कर्नाटक), पिपरिया जि. होशंगाबा (म.प्र.) तथा ब्यावर जि.अजमेर (राज.) के गरी बच्चों में कपड़े व जूतों का वितरण किया गया शिकोहाबाद जि. फिरोजाबाद (उ.प्र.) त जिंतूर जि. परभणी (महा.) में शीतल जल-प्या लगायी गयी। रायगढ़ (छ.ग.) के रेलवे स्टेशन शीतल जल-प्याऊ का शुभारंभ किया गया पलसुद जि. बड़वानी, सुंदरगढ़, उदाला त जशीपुर जि. मयुरभंज (उड़ीसा); अंकलेश्वर जि भरूच (गुज.); भागलपुर (बिहार); चाँपा (छ.ग के गरीबों में वस्त्र-वितरण किया गया।

वैवाहिक विज्ञापन

वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु। आपके कुल में सदैव हरिभक्ति बनी रहे

पूज्य बापूजी के ६८वें अवतरण दिवस के निमित्त विभिन्न समितियों व आश्रमों द्वारा किये गये सेवाकार्य

❖ संकीर्तन यात्राएँ एवं भंडारे ❖

फारबिसगंज जि. अररिया, मुजफ्फरपुर, कटिहार, बक्सर (बिहार); जिंतूर जि. परभणी, खामगाँव जि. बुलढाणा, मालेगाँव जि. नासिक, पूना, अमरावती, गुंजोटी – किनगाँव जि. लातूर, कोल्हापुर, यवतमाल, लासलगाँव जि. नासिक, तुमसर जि. भंडारा, वाशिम (महा.); जगाधरी जि. यमुनानगर, रोहतक (हरियाणा); हरखपुरा जि. महाराजगंज, आजमगढ़, बुलंदशहर, बाँदा, शिकोहाबाद जि. फिरोजाबाद, बदायूँ, इटावा, हमीरपुर (उ.प्र.); बिलासपुर, केशकाल जि. बस्तर (छ.ग.); लीमडी जि. सुरेन्द्रनगर, बिलिया जि.सूरत, कंटालु हनुमान जि.साबरकांठा, ओंझल जि. नवसारी, काजली जि. पंचमहाल, वलसाड़ (गुज.); सिहोर, चिचौली जि.रायसेन, केसली जि.सागर, सतना, हर्रई जि. छिन्दवाड़ा, श्योपुर, बडगाँव जि.खरगोन (म.प्र.); डुंगरपुर, खैरवाड़ा जि. उदयपुर, ब्यावर जि. अजमेर, इटावा-खोड़ावदा जि. कोटा, भरतपुर, झुन्झुनू, पाली (राज.); लड्डूगाँव जि. कालाहाँडी, सुंदरगढ़, भुवनेश्वर जि. खुर्दा, भवानीपटना जि. कालाहाँडी, कटक (उड़ीसा); काँकेर, कोरबा, कवर्धा जि.कबीरधाम, भिलाई जि. दुर्ग (छ.ग.); गुमला, कुलगो जि. गिरिडीह (झारखंड); हुन्नरदेव जि. कारवाड़ (कर्नाटक) में भव्य संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं व भंडारे किये गये।

❖ निःशुल्क अनाज-वितरण ❖

पिपरिया जि. होशंगाबाद, मनावर जि.धार, करेली जि. नरसिंहपुर, रीवा, हर्रई जि. छिन्दवाड़ा (म.प्र.); अमरावती, गोंदिया, मालेगाँव जि. नासिक, वर्धा (महा.); अनगुल, भवानीपटना जि. कालाहाँडी, कियाबाला जि. मयुरभंज (उड़ीसा); काँकेर, कोरबा, भिलाई जि. दुर्ग (छ.ग.); कहलगाँव जि. भागलपुर, पटना, भागलपुर (बिहार); बीकानेर, भरतपुर, पाली (राज.) के गरीब तथा अनाथों में निःशुल्क अनाज-वितरण किया गया।

❖ हवन-यज्ञ ❖

कटक (उड़ीसा); कुलगो जि. गिरीडीह (झारखंड); बिलासपुर (छ.ग.); बाँदा, हमीरपुर, हरदोई (उ.प्र.); जगाधरी जि. यमुनानगर (हरियाणा); हर्रई जि. छिन्दवाड़ा (म.प्र.); वर्धा, नेरूल नवी मुंबई (महा.) में पूज्य बापूजी की दीर्घायु एवं समाज में सुख-शांति के निमित्त महामृत्युंजय मंत्र से हवन-यज्ञ किया गया।

❖ अस्पतालों में फल-वितरण ❖

हमीरपुर, बाँदा (उ.प्र.); कटक, उदाला जि. मयुरभंज (उड़ीसा); रायगढ़, केशकाल जि. बस्तर, भिलाई जि. दुर्ग (छ.ग.); पटना, कटिहार (बिहार); सोलापुर, खामगाँव जि. बुलढाणा, तुमसर जि. भंडारा (महा.); सनावद जि. खरगोन (म.प्र.); ब्यावर जि. अजमेर (राज.), वलसाड़ (गुज.)।

❖ निःशुल्क नोटबुक-वितरण ❖

पूना, कोल्हापुर, सोलापुर, पुलगाँव जि.वर्धा (महा.); रोहतक (हरियाणा); फगवाड़ा (पंजाब); सुंदरगढ़ (उड़ीसा); हुन्नरदेव जि. कारवाड़ (कर्नाटक) के बच्चों में प्रेरक सुवाक्ययुक्त नोटबुकों का निःशुल्क वितरण किया गया।

❖ युवाधन सुरक्षा अभियान ❖

गुंजोटी – किनगाँव जि. लातूर (महा.), सुंदरगढ़ (उड़ीसा), पटना (बिहार) में 'युवाधन सुरक्षा' पुस्तक का वितरण किया गया।

❖ जेलों में सत्संग ❖

भिलाई जि.दुर्ग (छ.ग.), बक्सर (बिहार) की जेल में भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया।

❖ विविध सेवाकार्य ❖

गुमला (झारखंड), डुंगरपुर (राज.) में सामूहिक जपयज्ञ किया गया। (शेष पृष्ठ १६ पर)

कड़वा सच

आज आर्थिक लाभ के लोभ में नीलगिरि (यूकेलिप्टस) जैसे वृक्षों का अंधाधुंध रोपण हो रहा है परंतु अब धीरे-धीरे इसकी घातकता प्रकट हो रही है । प्रस्तुत हैं कुछ तथ्य :

१. नीलगिरि जल-संसाधनों को सोख लेता है । बड़े पैमाने पर इसके व्यावसायिक स्तर पर रोपण के फलस्वरूप देश के कई भागों में जल संसाधनों का तेजी-से ह्रास हुआ है । बताया जाता है कि हापुड़, गाजियाबाद (उ.प्र.) के गाँवों के किसानों की यह शिकायत है कि जब से नीलगिरी वृक्ष आस-पास के क्षेत्रों में लगाये गये हैं तब से भूमिगत जल का स्तर ८० से ९० फुट नीचे चला गया है ।

२. यह बीज-अंकुरण और पौध-विकास के लिए भूमि को विषाक्त बना देता है, जिससे उसके आस-पास के पेड़-पौधों, फसलों पर भी भारी कुप्रभाव पड़ता है । उस जमीन में अन्य पेड़-पौधे सरलता से उग नहीं सकते । कर्नाटक के शुष्क क्षेत्रों में जहाँ ये वृक्ष लगाये गये हैं किसानों को इस समस्या का विशेष सामना करना पड़ा है ।

३. 'सहारा विश्वविद्यालय' से संबद्ध श्री राबर्ट एडहार्ट और उनके सहयोगियों का कहना है कि ४० फुट ऊँचा नीलगिरि का एक पेड़ एक दिन में ८० गैलन (३०२.८ लीटर) पानी सोख लेता है, जिससे वहाँ के आस-पास की जमीन खुश्क हो जाती है । फलस्वरूप बार-बार पानी लगाने पर भी वहाँ के आस-पास की फसल को पानी कम मात्रा में मिलता है और फसल की पैदावार पर कुप्रभाव पड़ता है ।

४. योजना आयोग के भूतपूर्व सलाहकार डॉ. नलिन जयाल के अनुसार नीलगिरि नाजुक विज्ञान प्रणाली की जीव-वैज्ञानिक उत्पादकता को कम करके भूमि को रेगिस्तान बनाता है । इस पेड़ द्वारा पानी की अधिक माँग भूमि में नमी को समाप्त कर देती है, जिससे जल-विज्ञान का चक्र अस्थिर हो जाता है । फलस्वरूप बरसात में भी कमी आती है, भूमि बंजर होती जाती है, पैदावार भी कम होती है ।

५. 'भारतीय विज्ञान संस्थान पर्यावरण अध्ययन दल' की एक रिपोर्ट से यह ज्ञात हुआ है कि कर्नाटक के पश्चिमी घाट के जंगलों में नीलगिरि का रोपण आर्थिक दृष्टि से भी विफल रहा है । अनुमानित उपज की अपेक्षा वास्तविक उपज मात्र २५ से ५० प्रतिशत ही पायी गयी ।

इस प्रकार अनेक पहलुओं से घातक नीलगिरि के प्रसार को न रोका गया तो अनगिनत हानियों का सामना करना पड़ेगा ।

नीलगिरि की जगह पीपल, नीम, आँवला, तुलसी आदि श्रेष्ठ विकल्प हैं । सभी राज्य सरकारें इनके रोपण का अधिकाधिक प्रयत्न करें ।

ये सभी आर्थिक आय, वायुमंडल की शुद्धि, औषधीय उपयोगिता, सुख-शांतिप्रद वातावरण की निर्मिति इन सभी पहलुओं में श्रेष्ठ साबित हुए हैं । ऋषि-मुनियों से लेकर आधुनिक वैज्ञानिकों तक सभीने इनकी बहुआयामी उपयोगिता का गुणगान किया है । इनमें भी पीपल सर्वश्रेष्ठ है ।

'पद्म पुराण' में महर्षि व्यासजी कहते हैं : 'सब प्रकार के प्रयत्न से पीपल का वृक्ष लगाना चाहिए । बेल के आठ, बरगद के सात और नीम के दस वृक्ष लगाने का जो फल होता है, पीपल का एक पेड़ लगाने से भी वही फल होता है । पीपल के रूप में साक्षात् श्रीहरि ही इस भूतल पर विराजमान हैं । पीपल के दर्शन से पापनाश और स्पर्श से लक्ष्मी की प्राप्ति तथा प्रदक्षिणा करने से आयु बढ़ती है ।'

पीपल प्राणवायु का उत्तम स्रोत है । पीपल दिन में ही नहीं रात्रि को भी विपुल मात्रा में आक्सीजन देता है । अतः पर्यावरण की दृष्टि से भी यह सर्वथा उपयुक्त है । पीपल का उपयोग कई बिमारियों में औषधि के रूप किया जाता है । जैसे - पीलिया, हृदयरोग, संग्रहणी, कंठमाला, चमड़ी के रोग, जोड़ों का दर्द, बवासीर, वन्ध्यत्व, मधुमेह, गुर्दाशय के रोग, सर्पदंश आदि । इस प्रकार पीपल विस्तृत उपयोगितावाला वृक्ष है । ❒

रब मेरा सतगुरु बण के आया...

रब मेरा सतगुरु बण के आया, मैंनु वेख लैण दे।
मैंनु वेख लैण दे, मत्था टेक लैण दे।
रब मेरा सतगुरु बण के आया, मैंनु वेख लैण दे।
बूटे-बूटे पाणी पावे, सूखे बूटे हरे बणावे।
नी ओ आया माली बण के, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

घट-घट सब दे ज्योत जगावे,
मोह माया दे भरम मिटावे।
ऐ मीठी निगाह बरसावे, मैंनु वेख लैण दे।
ओ करदा सब नु निहाल, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

हरिओम दी बोली बड़ी प्यारी,
गंगाजी वी बणी पुजारी।
सब तीरथ होय निहाल, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

गुरां दी चरणी तीरथ सारे,
भक्ति, ज्ञान से पार उतारे।
नी ऐ आया तारणहारा, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

नाम दी इसने प्याऊ लगायी,
हरिनाम नाल दुनिया झुमायी।
ऐदे नाम दा अमृत पी के, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

लीलाशाहजी दा परम पियारा,
थाउमलजी दी अँखियां दा तारा।
माँ मँहगीबाजी दा लाल, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

गुरां दी सूरत रब दी सूरत,
कर दे मुरादें सब दी पूरण।
ऐ ब्रह्म दा रसस्वरूप, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

सतगुरां जहाज बणाया,
पार करण दा बीड़ा उठाया।
नी ओ आया माझी बण के, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

प्रीत है इस दी बड़ी अनोखी,
ऐथे नाम दी दौलत कदे न खुटदी।
नी ऐ आया जग नु झुमावण, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

जित्थे वी ओ चरण छुआवे,
पत्थर वी ओथे तर जावे।
ओ आया पार उतारणहार, मैंनु वेख लैण दे।
ऐ आया जग दा वाली, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

गुरां दी महिमा गायी ना जावे,
त्रिलोकी ऐथे झुक जावे।
ऐ रब दा पूरण रूप, मैंनु वेख लैण दे।
रब दा प्रेमस्वरूप, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

जनम मरण दे चक्कर कट दे,
जेहड़े इसदे दर ते झुकदे।
ऐ ब्रह्म दा साकार रूप, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

काम, क्रोध, मद, लोभ छुड़ावे,
जीव ब्रह्म दा भेद बतावे।
मुक्तिदाता बन के आया, मैंनु वेख लैण दे।
रब मेरा०

RNP No. GAMC-1253-A/2006
RNI No.66693/97
LWPP No.GUJ/279/06-08
Permitted to post at AHD-PSO
from 10th to 15th of E.M.

गरीबों, अनाथों हेतु भंडारे एवं अनाज-वितरण



दौंड, जि. पुणे (महा.)



मिसरौद, जि. होशंगाबाद (म.प्र.)



रायरंगपुर, जि. मयूरभंज (उड़ीसा)



शिकोहाबाद, जि. फिरोजाबाद (उ.प्र.)



वर्धा (महा.)



रुड़की (उत्तराखण्ड)